आज का पुरुषार्थ 29 Oct 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"स्वयं भाग्य-विधाता हमारे साथ है .. तो आज अपने भाग्य की गीत गाते हुए अपने पुरुषार्थ में .. और एक कदम आगे बढ़ाये "*

हम इस सृष्टि पर बहुत बहुत भाग्यवान है। पद्मापदम भाग्यशाली है। कदम कदम पर हमारी पद्मों की कमाई जमा होती है। इस बात को शायद बहुतों ने ठीक से समझते नहीं है।

यही सत्य है, हर कदम उठाते अगर हम **योगयुक्त** रहे या **अशरीरी** होने की practise करते रहे, तो हमारा भाग्य ज़मा होता रहता है। **पुण्य कर्मों** से हमारा बहुत भाग्य ज़मा होता है।

और भगवान के कार्य में **सहयोग** देने से तो हमारे भाग्य की रेखा बहुत श्रेष्ठ बन जाती है। कोई यह भी सोच सकता है, भगवान के पास तो बहुत पैसे है। उन्हें धन से सहयोग देने की क्या जरूरत है? आप न दे, आपका भाग्य कम हो जायेगा।

यह तो भाग्य निर्माण के लिए बाबा बच्चों के सहयोग लेते है। कि जिधर धन लगे, उधर मन लगे, **बुद्धि** लगे। यह सोचने की जरूरत नहीं, मेरा धन कहाँ यूज़ हुआ ?

यह सब संकल्प करने से मेरा पन रहता है। और हमारे **पुण्य** क्षीण होते जाते है। **हम ईश्वरीय कार्य में सहयोग करते चले।** और अपने भाग्य की रेखायें लम्बी खींचते चले।

तन का भी अभिमान न रहे। तन सेवा में लगे तो **तन का श्रेष्ठ भाग्य भी जन्म जन्म के लिए प्राप्त हो जाता है।** अर्थात तन सम्पूर्ण स्वस्थ रहेगा। तन का भी हमें सुख रहेगा।

आत्मा इस तन में बैठकर अपने को ऐसा मेहसूस नहीं करेगी कि ' पिंजरे में आ गये ' .. अपितु **सुख** का अनुभव होगा।

हम **श्रेष्ठ भाग्य** बनाते चले। अनेकों को भगवान से मिलाते चले। उन्हें सत्य मार्ग दिखाते चले। लोग सोचेंगे कि आज तो सत्य मार्ग जानने के लिए लोग तैयार ही नहीं है।

वह अंधेरे में चलने को ही प्रकाश का मार्ग समझ रहे है। ठोकरे खा रहे है। विषय विकारों की गर्त में गिर रहे है, फिर भी सम्भालने का नाम नहीं लेते।

परन्तु हम पात्र देखें। देवकुल की आत्मायें तो ज्ञान की प्यासी है। वो बाबा की ओर आकर्षित हो रही है। उन्हें ख़ोज हो रही है, सत्य की ओर चलें।

" कहाँ है सत्य? कहाँ मिलेंगे हमें हमारे प्राणेश्वर परमपिता? "

उन्हें पहचानकर उन्हें सत्य मार्ग पर लाना है। उन्हें प्योरीटी की ओर बहुत आकर्षण होगा। जैसे ही हम बतायेंगे कि ..

" ***आप देवकुल की महान आत्मायें हो***" .. वह इस ओर ज्यादा एट्रक्ट होंगी। दुसरों को सन्मार्ग दिखाकर हम अपने और दूसरों के श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करते रहे।

हम बुद्धि का भी निर्माण करते है। ज्ञान बल से हम स्वदर्शन चक्रधारी बनते है। अपने को देखे सत्ययुग से →

परमधाम से जब हम आत्मायें सत्ययुग मे आई, कैसे कैसे नीचे उतरते आये है! कैसे आत्मा एक देह को छोड़कर दुसरे में आते है! फिर तीसरे में, फिर चौथे में।

परिवार बदलते आयें, सम्बन्ध बदलते आये। फ़ील होगा, **अशरीरीपन**, देह का भान खतम होता जायेगा। तो हम ..

" बहुत बहुत भाग्यवान है "

सवेरे उठते ही हम स्वयं को इस संकल्प से चार्ज कर दिया करे ..

" मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं "

.. जिन्हें आंख खोलते ही प्रभू का मिलन होता है, जिन्हें आख खोलते ही अमृत पान करने को मिलता है, जिनका भाग्य बनाने के लिए स्वयं भाग्य-विधाता उपस्थित रहता है।

इस नशे में हम जितना जितना आगे बढ़ेंगे और स्वयं को चार्ज करेंगे उतना ही हमारा भाग्य श्रेष्ठ बनता जायेगा और अंततः हम **मास्टर भाग्य-विधाता** बन जायेंगे।

तो आज सारा दिन .. हम **स्वदर्शन चक्रधारी** होकर रहेंगे। अपनी पूरी सत्ययुग से लेकर कलियुग की पार्ट को ज़रा देखेंगे।

और जब हम कलियुग के अंत में आये, तब भगवान आकर हमारे साथी बन गये। वो हमसे कम्बाइण्ड बन गये। हम याद रखेंगे →

" सर्वशक्तिमान मुझसे कम्बाइण्ड है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org